patrika.com epaper editions
78 more publications
Mon Sep 30 2013 Subscribe Clip < Page 30 of 38 > Search
Add comment Like 0 Tweet 0 Download

पत्रिका XPOSE [ mega स्टोरी ] सोमवार 30 सितंबर 2013 • 9

भविष्य में रेलगाड़ी से सिंगापुर, तुर्की, रूस, कोरिया जैसे देशों का सफर हो सकेगा, यह सपना या मजाक नहीं, बल्कि ट्रांस एशियन रेल नेटवर्क इसे संभव बना सकता है।

ऋषि कुमार सिंह

एशिया, दक्षिण-पूर्वी एशिया मध्य एशिया और यूरोप को रेलमार्ग से जोड़ने की योजना का नाम ट्रांस एशियन रेल नेटवर्क है। इसमें प्रमुख तौर पर चार कॉरिडोर होंगे, जो विभिन्न देशों को आपस में जोड़ देंगे। 10 नवंबर 2006 को इंटर-गवर्नमेंटल एग्रीमेंट पर हस्ताक्षर के साथ 1960 में की गई परिकल्पना को ठोस आधार मिला है। लगभग 80,900 किमी के कुल रेलमार्ग से उन देशों को सर्वाधिक फायदा होगा, जो स्थलरुद्ध होने के नाते समुद्री यातायात की सुविधा से दूर हैं। यह अंतरराष्ट्रीय फलक पर आर्थिक एवं सांस्कृतिक संबंधों को लेकर नए अवसर उपलब्ध कराएगा।

# सबको जोड़ेगी ट्रांस एशियन रेल नेटवर्क



## 10 नवम्बर 2006

दक्षिण कोरिया के बुसान शहर में 18 देशों ने ट्रांस एशिया रेल नेटवर्क के इंटर-गवर्नमेंटल एग्रीमेंट पर हस्ताक्षर किए।

चारों कॉरिडोर सहित ट्रांस एशियन रेल नेटवर्क का मानचित्र।

प्रतीकात्मक चित्र

## प्रोजेक्ट के चार प्रमुख हिस्से

ट्रांस एशियन रेल नेटवर्क के लिए ईएससीएपी ने 'स्टेप बाय स्टेप' दृष्टिकोण अपनाया है। क्षेत्रीय विस्तार के आधार पर प्रोजेक्ट को चार हिस्सों में बांटा गया है। **एक:** नॉर्दन कॉरिडोर के जरिए चीन, कजाखस्तान, मंगोलिया, रशियन फेडरेशन और कोरियन प्रायद्वीप रेल नेटवर्क से जुड़ेगा। **दो:** साउदर्न कॉरिडोर से थाईलैंड और दक्षिणी चीन का यूनान प्रांत म्यांमार, बांग्लादेश, भारत, पाकिस्तान और ईरान के जरिए तुर्की से जुड़ेगा। श्रीलंका भी इसका हिस्सा होगा। **तीन:** सब-रीजनल नेटवर्क के तहत आसियान और इंडो-चीन सब-रीजन को जोड़ा जाएगा। **चार:** नॉर्थ-साउथ कॉरीडोर से नार्दन यूरोप और पर्सियन खाड़ी को रशियन फेडरेशन, सेंट्रल एशिया और कराकस क्षेत्र के माध्यम से जोड़ा जाएगा।

## ट्रेन से जुड़ने वाले देश और दूरी

| क्षेत्र | दूरी | देश |
|---|---|---|
| साउथ-ईस्ट एशिया | 12,600 | कंबोडिया, इंडोनेशिया, लाओ पीडीआर, मलेशिया, म्यांमार, सिंगापुर, थाईलैंड, वियतनाम |
| नॉर्थ, नॉर्थ-ईस्ट एशिया | 32,500 | चीन, डेमोक्रेटिक पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ कोरिया, मंगोलिया, रिपब्लिक ऑफ कोरिया, रूस फेडरेशन |
| सेंट्रल एशिया, कराकस | 13,200 | अरमेनिया, अजरबेजान, जार्जिया, कजाखस्तान किर्गिस्तान, ताजकिस्तान, तुर्कमेनिस्तान, अजरबेजान |
| साउथ एशिया | 22600 | ईरान, तुर्की बांग्लादेश, भारत, ईरान, नेपाल, पाकिस्तान, श्रीलंका, तुर्की |
| कुल | 80,900 | |

## लाभ और चुनौतियां

ट्रांस एशियन रेल नेटवर्क से राष्ट्रीय और अंतराष्ट्रीय स्तर पर नए अवसर देखे जा रहे हैं। खासतौर पर वे देश, जो स्थलबद्ध होने के नाते बंदरगाहों की सुविधा से हजारों किमी दूर हैं, ऐसे देशों की अर्थव्यवस्था व रेल नेटवर्क बंदरगाहों से जुड़ जाएगी, जो किसी भी देश के लिए वैश्विक अर्थव्यवस्था में भागीदारी के लिए सस्ते यातायात साधन के रूप में महत्वपूर्ण होगा। इसके अलावा इसे पर्यावरण अनुकूल, किफायती व भरोसेमंद यातायात के साधन के तौर पर भी देखा जा रहा है। हालांकि इसके सामने वित्तीय, संचालन और व्यवसायिक स्तर की चुनौतियां हैं। रेल नेटवर्क से जुड़ने वाले विभिन्न संगठनों के बीच समन्वय के साथ कॉमन इंफॉर्मेशन टेक्नोलॉजी के विकास पर ध्यान देने की जरूरत है।

## भारत की भूमिका और हित

ट्रांस एशियन रेल नेटवर्क (टीएआरएन) के तहत भारत पूर्वोत्तर राज्यों में रेल नेटवर्क विकसित कर रहा है। म्यांमार को जोड़ने वाले 118 किमी हिस्से पर नॉर्थ-ईस्ट फ्रंटियर रेलवे सर्वेक्षण कार्य कर रहा है। इससे मणिपुर की राजधानी इंफाल को सीमावर्ती मोराह और पश्चिमी म्यांमार के तामू से जोड़ा जाएगा। इसके अलावा त्रिपुरा के जवाहर नगर रेलवे स्टेशन को उत्तरी मिजोरम के कोलासिब और म्यांमार के डरलोन से जोड़ने का प्रस्ताव है। नॉर्थ-ईस्ट फ्रंटियर रेलवे के चीफ इंजीनियर हरपाल सिंह के अनुसार, त्रिपुरा और मणिपुर के ट्रांस एशियन रेल नेटवर्क से जुड़ने के बाद पूर्वोत्तर राज्य दक्षिण-पूर्वी एशियाई देशों के गेटवे साबित होंगे। पूर्वोत्तर परिषद की तरफ से तैयार विजन-2020 के तहत नॉर्थईस्ट फ्रंटियर रेलवे पूर्वोत्तर के सभी राज्यों की राजधानी को आपस में जोड़ा जाना है। अभी गुवाहाटी और अगरतला तक ही रेल संपर्क मौजूद है। अगले वर्ष बांग्लादेश को रेल लिंक से जोड़ने पर काम शुरु होगा। इस 15 किमी रेलवे ट्रैक के निर्माण पर भारत 252 करोड़ रुपए का खर्च करेगा, जिससे अगरतला, बांग्लादेश के पश्चिम-पूर्वी शहर अखुराह से जुड़ जाएगा। यह चिटगांव पोर्ट, साहलेत और राजधानी ढाका को जोड़ने वाला प्रमुख जंक्शन है। 2010 में भारत-बांग्लादेश इस पर समझौता कर चुके हैं। टीएआरएन के विकास से पूर्वोत्तर राज्यों की दूरी में कमी आ जाएगी। अभी अगरतला-कोलकाता के बीच कुल दूरी 1650 किमी है, गुवाहाटी-पश्चिम बंगाल के रास्ते नई दिल्ली-अगरतला की दूरी 2637 किमी. है, जबकि बांग्लादेश के जरिए कोलकाता और अगरतला की दूरी मात्र 350 किमी रह जाती है। यह पूर्वोत्तर राज्यों को समुद्री यातायात से भी जोड़ने में मददगार होगा।

**2007**
भारत ने 29 जून को इंटर-गवर्नमेंटल एग्रीमेंट ऑन ट्रांस एशियन रेल नेटवर्क पर हस्ताक्षर किया।

## रेल नेटवर्क का सफर

**1960**
यूनाइटेड नेशन इकोनॉमिक कमीशन फॉर एशिया एंड फार ईस्ट (यूएनईसीएएफई) ने सिंगापुर से लेकर तुर्की तक 14,000 किमी दूरी की ट्रांस एशियन रेल नेटवर्क का प्रस्ताव किया।

**1976**
यूएनईसीएएफई ने 32वीं बैठक में प्रोजेक्ट दायरे में ग्रामीण क्षेत्रों व बंदरगाहों को जोड़ने का प्रस्ताव। ट्रांस एशियन रेल नेटवर्क का मास्टर प्लान का प्रयास शुरू हुआ।

**1996**
ढांचागत विकास पर नई दिल्ली में मंत्रीस्तरीय बैठक। 1997-2006 दशक के लिए एक्शन प्लान घोषित।

**2000**
यूएनईसीएएफई और इंटरनेशनल यूनियन ऑफ रेलवे ने सहयोग व विशेषज्ञता साझेदारी के लिए समझौता-पत्र पर हस्ताक्षर किया।

**2001**
सियोल (रिपब्लिक ऑफ कोरिया) में ढांचागत विकास को लेकर मंत्री स्तरीय बैठक। नई दिल्ली रीजनल एक्शन प्लान के दूसरे चरण (2002-06) पर बनी सहमति।

**2002**
बेलारूस, चीन, पोलैंड, इंटरनेशनल यूनियन ऑफ रेलवे और अर्गेनाइजेशन फॉर रेलवे को-ऑपरेशन ने नॉर्दन कॉरिडोर के तहत ब्लॉक-ट्रेन संचालन के लिए योजना तैयार की।

**2003**
चीन-मंगोलिया के बीच ट्रांस एशियन रेल नेटवर्क के नॉर्दन कॉरिडोर पर पहली ब्लॉक ट्रेन का संचालन किया गया।

**2004**
यूएनईसीएएफई की शंघाई की 60वीं बैठक में रेल नेटवर्क के लिए इंटर-गवर्नमेंटल एग्रीमेंट का प्रस्ताव। संबंधित देशों के साथ बातचीत शुरू हुई।

**2005**
भारतीय रेलवे और यूएनईसीएएफई ने संयुक्त रूप से नई दिल्ली में इंटर-गवर्नमेंटल एग्रीमेंट मसौदे की समीक्षा के लिए विशेषज्ञों की पहली बैठक आयोजित की। बैंकाक में हुई बैठक में मसौदा तैयार करने का काम पूरा।

**2006**
बुसान, रिपब्लिक ऑफ कोरिया में हस्ताक्षर समारोह का आयोजन। 18 सहभागी देशों ने हस्ताक्षर किए। 2007-08 के बीच चार और देशों ने हस्ताक्षर किए।

Feedback readwhere (http://www.readwhere.com/)